तमसो मा ज्योतिर्गमय

हिन्दी भाषा, साहित्य एवं भारतीय संस्कृतिः वैश्विक परिदृश्य

हिन्दी साहित्य के विविध आयाम : वैश्विक परिदृश्य

L.V.D. COLLEGE
RAICHUR

संपादक मंडल

राजेश अग्रवाल, डॉ. डी. विद्याधर, डॉ. सुषमा देवी
डॉ. डी. जयप्रदा, डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा

PRINCIPAL
L.V.D. College, RAICHUR-03.

Scanned with OKEN Scanner

भाषा, साहित्य एवं भारतीय संस्कृति : वैश्विक परिदृश्य

हिंदी साहित्य के विविध आयाम : वैश्विक परिदृश्य

संपादक मंडल

राजेश अग्रवाल, डॉ.डी.विद्याधर, डॉ.सुषमा देवी, डॉ.डी.जयप्रदा, डॉ.सुरेश कुमार मिश्रा

प्रकाशक

मिलिन्द प्रकाशन

4-3-178/2, कन्दास्वामी बाग

हनुमान व्यायामशाला की गली

सुल्तान बाजार

हैदराबाद -500095

फोन : 24753737 / 32912529

अक्षर संयोजक

डॉ.सुरेश कुमार मिश्रा

7386578657

आवरण

वी.डिजाइन

फोन : 98855 06088

प्रथम संस्करण

2019

मूल्य

रु.825/-

(रुपये आठ सौ पच्चीस मात्र)

ISBN : 978-81-905891-5-5

HINDI SAHITYA KE VIVIDH AYAM : VAISHVIK PARIDRISHYA

Editors

Rajesh Agrawal, Dr.D.Vidyadhar, Dr.Sushma Devi, Dr.D.Jayaprada, Dr.Suresh Kumar Mishra

Scanned with OKEN Scanner

39. वैश्वीकरण के संदर्भ में संघर्षरत नारी सुरेखा	प्रो. एस.वी.एस.एस.नारायण राजू	211
40. राकेश वत्स के उपन्यासों में दलितों की संघर्ष–चेतना	डॉ.कुमार नागेश्वरराव	216
41. हिन्दी कथा साहित्य में व्यक्त नारी चेतना	डॉ.पवन नागनाथराव एमेकर	221
42. वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में दलित जीवन की वास्तविकता को चित्रित करती कहानियाँ	डॉ. मिलिंद सालवे	225
43. हिन्दी में नाटक और रंगमंच का विविध प्रयोग	डॉ. रेखा शर्मा	234
44. हिन्दी उपन्यास : सांस्कृतिक सन्दर्भ	डॉ. श्यामराव राठोड़	241
45. शुरुआती हिन्दी उपन्यासों में निहित समाज सुधार की झलक	डॉ जीतेंद्र प्रताप	252
46. लोक साहित्य में लोक गीतों का महत्व	डॉ. अरूण हेरेमत	259
47. उषा प्रियंवदा के उपन्यास में नारी के बदलते विवाह परिवेश-वैश्विक परिप्रेक्ष्य में	डॉ. सफ़म्मा	263
48. राग दरबारी की भाषा और यथार्थ	डॉ. एम. आंजनेयुलु	269
48. 21वीं सदी का हिन्दी नाटक-उत्तर-आधुनिकता	एम. रामचंद्रम	273
49. हिन्दी समाचार-पत्रों में प्रकाशित राजनैतिक समाचार शीर्षकों का भाषाई स्वरूप	डॉ. मु. अफसर अली राईनी, दानिश खान	285
50. ध्रुवस्वामिनी नाटकः आधुनिक जीवन परिदृश्य	डॉ. डी. अनंतलक्ष्मी	293
51. समकालीन हिन्दी कहानियों में बदलते मानवीय संबंध	डॉ. नागलगिद्दे मारूति	296
52. आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के निबंधों में मानवीय चेतना	डॉ.के.पद्मा रानी	302
53. मॉरीशस के साहित्यकारों का विश्व हिंदी में योगदान	डॉ. मीना सिंह	307
54. विदेशी हिन्दी कहानियों के विभिन्न दृष्टिकोण	डॉ. टी. अरुण कुमारी	314
55. अंतिम दशक के हिन्दी नाटकों में सामाजिक चेतना	डॉ. माधवी	320
56. हिन्दी उपन्यास : विविध संदर्भ	डॉ.जी.एच.नीता	325

Scanned with OKEN Scanner

लोक साहित्य में लोक गीतों का महत्व

- डॉ. अरूण हेरेमत

लोकगीत ही किसी भी भाषा या प्रदेश का सच्चा प्रतिनिधित्व कर सकते हैं, क्योंकि वे जनसाधारण के मुख से बिना किसी शास्त्रीय आधार के अविरल एवं प्रामाणिक रूप से बहनेवाली शब्दगंगा होते हैं, जिसमें सच्चाई एवं वास्तविक चित्रण होता है। लोकगीत वे गीत होते हैं जो सर्व साधारण समाज की मौखिक रूप में भावमय अभिव्यक्ति कराते हैं। किसी भी भाषा के साहित्य का मूल्यांकन करना हो तो उस भाषा के लोकसाहित्य का मूल्यांकन करना अनिवार्य होता है। बिना लोकयसाहित्य के साहित्य निष्प्राण लगता हैं।

श्याम परमार : लोकगीत लोकसाहित्य का ही गीत प्रधान अंग है जिसका उद्भव नगर और ग्राम के संयुक्त साधारण जन के मध्य होता है।

हिन्दी साहित्य कोश : हिन्दी साहित्य कोश में लोक प्रचलित गीत, लोकनिर्मित गीत तथा लोकविषय गीत ये तीन अर्थ देते हुए कहा गया है - श्लोकगीत तो वह प्रकार है, जिसको ऐसे किसी व्यक्तित्व से संबंधिक नहीं किया गया जा सकता, जिसकी मेधा लोकमानस की स्वाभाविक मेधा नहीं है।

महात्मा गांधी : ये गीत जनता का साहित्य है, सच पुछो तो लेकगीत ही जनता की भाषा है। लोकगीतों की परिभाषाएँ देते हुए मराठी विश्वकोश में लिखा गया है - श्मौखिक परंपरेने चालत आलेल्या अनेकविध गीत प्रकारांचा निर्देश या संज्ञेने केला जातो. सर्व लोकसाहित्य प्रमाणे लोकगीते ही समूह मनाची व समूह प्रतिभेची निर्मिती आहे. निसर्गाच्या लयबध्दतेशी व तालबद्धतेशी संवाद साधितच ही गीत निर्मिती झाली.

महात्मा गांधीजी लोकगीतों को जनता का साहित्य मानते हुए कहते है कि लोकगीत ही जनता की भाषा है। वे मानते है कि वही काव्य और वही साहित्य स्थायी रहता है, जिसे लोग सुगमता से पा सकते है, आसानी से पचा सकते है। ऐसा ही साहित्य लोकसाहित्य है।

पंडित हजासी प्रसाद द्विवेदी जी लोकगीत को ग्रामगीत कहते है। वे ग्रामगीत को सौंदर्य तक ही सीमित नहीं मानते बल्कि उनका कार्य भी

L.V.D. COLLEGE RAICHUR
PRINCIPAL
L.V.D. College, RAICHUR-03.
Scanned with OKEN Scanner

संदर्भ सूची :

1. भारतीय लोकसाहित्य - डा. श्याम परमार पृ. 73
2. हिन्दी साहित्यकोश- सं.डा. धीरेंद्र वर्मा तथा अन्य पृ. 689
3. बृहत् हिन्दी कोश, ज्ञानमंडल, बनारस पृ. 1175
4. ऋग्वेद 9/99/4
5. ऋग्वेद 1/7/2
6. वाल्मिकी रामायण (बालकांड) डी. एच. भट्टड व्दारा सटीक पृ. 122
7. ग्रामसाहित्य भाग (1) रामनरेश त्रिपाठी पृ. 59
8. हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास स राहुल सांकृत्यायन षोडश भाग, पृ. 15

विभाग अध्यक्षा,
एल. वी. डी. कॉलेज,
रायपूर, कर्नाटक राज्य

Scanned with OKEN Scanner